

中 藥 知 識

謝海洲編

· 科 學 普 及 出 版 社
1958 年 · 北 京



目 次

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108	109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120	121	122	123	124	125	126	127	128	129	130	131	132	133	134	135	136	137	138	139	140	141	142	143	144	145	146	147	148	149	150	151	152	153	154	155	156	157	158	159	160	161	162	163	164	165	166	167	168	169	170	171	172	173	174	175	176	177	178	179	180	181	182	183	184	185	186	187	188	189	190	191	192	193	194	195	196	197	198	199	200	201	202	203	204	205	206	207	208	209	210	211	212	213	214	215	216	217	218	219	220	221	222	223	224	225	226	227	228	229	230	231	232	233	234	235	236	237	238	239	240	241	242	243	244	245	246	247	248	249	250	251	252	253	254	255	256	257	258	259	260	261	262	263	264	265	266	267	268	269	270	271	272	273	274	275	276	277	278	279	280	281	282	283	284	285	286	287	288	289	290	291	292	293	294	295	296	297	298	299	300	301	302	303	304	305	306	307	308	309	310	311	312	313	314	315	316	317	318	319	320	321	322	323	324	325	326	327	328	329	330	331	332	333	334	335	336	337	338	339	340	341	342	343	344	345	346	347	348	349	350	351	352	353	354	355	356	357	358	359	360	361	362	363	364	365	366	367	368	369	370	371	372	373	374	375	376	377	378	379	380	381	382	383	384	385	386	387	388	389	390	391	392	393	394	395	396	397	398	399	400	401	402	403	404	405	406	407	408	409	410	411	412	413	414	415	416	417	418	419	420	421	422	423	424	425	426	427	428	429	430	431	432	433	434	435	436	437	438	439	440	441	442	443	444	445	446	447	448	449	450	451	452	453	454	455	456	457	458	459	460	461	462	463	464	465	466	467	468	469	470	471	472	473	474	475	476	477	478	479	480	481	482	483	484	485	486	487	488	489	490	491	492	493	494	495	496	497	498	499	500	501	502	503	504	505	506	507	508	509	510	511	512	513	514	515	516	517	518	519	520	521	522	523	524	525	526	527	528	529	530	531	532	533	534	535	536	537	538	539	540	541	542	543	544	545	546	547	548	549	550	551	552	553	554	555	556	557	558	559	560	561	562	563	564	565	566	567	568	569	570	571	572	573	574	575	576	577	578	579	580	581	582	583	584	585	586	587	588	589	590	591	592	593	594	595	596	597	598	599	600	601	602	603	604	605	606	607	608	609	610	611	612	613	614	615	616	617	618	619	620	621	622	623	624	625	626	627	628	629	630	631	632	633	634	635	636	637	638	639	640	641	642	643	644	645	646	647	648	649	650	651	652	653	654	655	656	657	658	659	660	661	662	663	664	665	666	667	668	669	670	671	672	673	674	675	676	677	678	679	680	681	682	683	684	685	686	687	688	689	690	691	692	693	694	695	696	697	698	699	700	701	702	703	704	705	706	707	708	709	710	711	712	713	714	715	716	717	718	719	720	721	722	723	724	725	726	727	728	729	730	731	732	733	734	735	736	737	738	739	740	741	742	743	744	745	746	747	748	749	750	751	752	753	754	755	756	757	758	759	760	761	762	763	764	765	766	767	768	769	770	771	772	773	774	775	776	777	778	779	770	771	772	773	774	775	776	777	778	779	780	781	782	783	784	785	786	787	788	789	790	791	792	793	794	795	796	797	798	799	800	801	802	803	804	805	806	807	808	809	8010	8011	8012	8013	8014	8015	8016	8017	8018	8019	8020	8021	8022	8023	8024	8025	8026	8027	8028	8029	8030	8031	8032	8033	8034	8035	8036	8037	8038	8039	8040	8041	8042	8043	8044	8045	8046	8047	8048	8049	8050	8051	8052	8053	8054	8055	8056	8057	8058	8059	8060	8061	8062	8063	8064	8065	8066	8067	8068	8069	8070	8071	8072	8073	8074	8075	8076	8077	8078	8079	8080	8081	8082	8083	8084	8085	8086	8087	8088	8089	8090	8091	8092	8093	8094	8095	8096	8097	8098	8099	80100	80101	80102	80103	80104	80105	80106	80107	80108	80109	80110	80111	80112	80113	80114	80115	80116	80117	80118	80119	80120	80121	80122	80123	80124	80125	80126	80127	80128	80129	80130	80131	80132	80133	80134	80135	80136	80137	80138	80139	80140	80141	80142	80143	80144	80145	80146	80147	80148	80149	80150	80151	80152	80153	80154	80155	80156	80157	80158	80159	80160	80161	80162	80163	80164	80165	80166	80167	80168	80169	80170	80171	80172	80173	80174	80175	80176	80177	80178	80179	80180	80181	80182	80183	80184	80185	80186	80187	80188	80189	80190	80191	80192	80193	80194	80195	80196	80197	80198	80199	80200	80201	80202	80203	80204	80205	80206	80207	80208	80209	80210	80211	80212	80213	80214	80215	80216	80217	80218	80219	80220	80221	80222	80223	80224	80225	80226	80227	80228	80229	80230	80231	80232	80233	80234	80235	80236	80237	80238	80239	80240	80241	80242	80243	80244	80245	80246	80247	80248	80249	80250	80251	80252	80253	80254	80255	80256	80257	80258	80259	80260	80261	80262	80263	80264	80265	80266	80267	80268	80269	80270	80271	80272	80273	80274	80275	80276	80277	80278	80279	80280	80281	80282	80283	80284	80285	80286	80287	80288	80289	80290	80291	80292	80293	80294	80295	80296	80297	80298	80299	80300	80301	80302	80303	80304	80305	80306	80307	80308	80309	80310	80311	80312	80313	80314	80315	80316	80317	80318	80319	80320	80321	80322	80323	80324	80325	80326	80327	80328	80329	80330	80331	80332	80333	80334	80335	80336	80337	80338	80339	80340	80341	80342	80343	80344	80345	80346	80347	80348	80349	80350	80351	80352	80353	80354	80355	80356	80357	80358	80359	80360	80361	80362	80363	80364	80365	80366	80367	80368	80369	80370	80371	80372	80373	80374	80375	80376	80377	80378	80379	80380	80381	80382	80383	80384	80385	80386	80387	80388	80389	80390	80391	80392	80393	80394	80395	80396	80397	80398	80399	80400	80401	80402	80403	80404	80405	80406	80407	80408	80409	80410	80411	80412	80413	80414	80415	80416	80417	80418	80419	80420	80421	80422	80423	80424	80425	80426	80427	80428	80429	80430	80431	80432	80433	80434	80435	80436	80437	80438	80439	80440	80441	80442	80443	80444	80445	80446	80447	80448	80449	80450	80451	80452	80453	80454	80455	80456	80457	80458	80459	80460	80461	80462	80463	80464	80465	80466	80467	80468	80469	80470	80471	80472	80473	80474	80475	80476	80477	80478	80479	80480	80481	80482	80483	80484	80485	80486	80487	80488	80489	80490	80491	80492	80493	80494	80495	80496	80497	80498	80499	80500	80501	80502	80503	80504	80505	80506	80507	80508	80509	80510	80511	80512	80513	80514	80515	80516	80517	80518	80519	80520	80521	80522	80523	80524	80525	80526	80527	80528	80529	80530	80531	80532	80533	80534	80535	80536	80537	80538	80539	80540	80541	80542	80543	80544	80545	80546	80547	80548	80549	80550	80551	80552	80553	80554	80555	80556	80557	80558	80559	80560	80561	80562	80563	80564	80565	80566	80567	80568	80569	80570	80571	80572	80573	80574	80575	80576	80577	80578	80579	80580	80581	80582	80583	80584	80585	80586	80587	80588	80589	80590	80591	80592	80593	80594	80595	80596	80597	80598	80599	80600	80601	80602	80603	80604	8
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	---

一、中藥的起源和發展

我們的祖先為了找尋食物，在和大自然鬥爭中認識了一些自然界動植物毒性以後這種知識逐漸積累，並發展而成為一門受到廣泛利用的科學——中藥。

我國古代把記述藥物知識的書稱為“本草”，因為這門學問和人類的生活與健康關係十分密切，所以發達很早，刊行的書籍也很多，本草這門科學在我國約有二千年以上歷史，我國歷代的本草著作，就是我國歷代的醫藥學家研究藥物的經驗記錄和總結，對我們今日學習和研究祖國醫學來說，是一部極寶貴的遺產，因而我們應當牢牢地記住黨的指示“系統學習，全面繼承，整理提高”。從而擔當起繼承和發揚的責任。

茲將流傳下來的主要本草著作，簡單介紹於後：

1.“神農本草經”編著年代約在公元前一世紀。又相傳是吳普、李当之等人，依據他們的老師張機、華陀等傳授給他們的藥物知識編纂的。這書大概不是一個人寫成的，不是一次寫成的，也不是在一個地方寫成的，而是很多地方，很多人，經過很長時期，口傳、筆錄、彙集、加工整理、增補而成的，所以就託名於神農了。

“神農本草經”收載藥物三百六十五種，其中有重複的十八種，實際共有三百四十七種，包括植物性藥二百三十九種，動物性藥六十五種，礦物性藥四十三種。

2. 刘宋（公元五世紀）雷敷著“雷公炮炙論”，論述藥物加工配制的方法，發明了用藥的劑型。因古代中藥炮炙法無專書討論，分散在各家本草之中，傑出的藥學家兼化學家雷敷首

先归纳总结了前人的成就，撰成了第一部举世闻名的中藥炮炙專書“炮炙論”，以往中药店所推崇的“遵古炮炙”基本上是指雷斂的炮炙論而言的。

3. 北齐(公元五世纪)徐之才依据“雷公药对”，按药性的有毒無毒，認為药物有相須(互相可以配合，同用时發揮协同作用)相反(互相不能配合，同用时發生拮抗作用)等作用。

4. 梁(公元五世纪)陶弘景把“神农本草經”用朱来書写，又增加汉魏以来名医常用的药三百六十五种，用墨来書写，称为“名医別录”；兩書合編在一起，叫做“本草經集注”。

5. 唐(公元七世纪)苏敬等著“新修本草”，以集体力量，按物繪圖，增加药物一百十四种，共收載八百四十四种，

6. 唐(公元七世纪)陈藏器著“本草拾遺”，因为本草經虽然經過陶弘景、苏敬等增訂，然遺漏还是很多，所以他写成这本書，补充以前遺漏的各种药物。李时珍曾称贊他“博極群書”。

7. 唐(公元七世纪)孟诜著“食疗本草”，收載二百四十一種有营养价值的药。

8. 后蜀(公元九——十世纪)韓保昇著“蜀本草”。

9. 唐宋年間，有日华子著“日华子諸家本草”。

10. 宋(公元十世纪)掌禹錫、苏頌等著“嘉祐補註本草”。

11. 宋(公元十世纪)苏頌著“圖經本草”。

12. 宋元祐年間(公元十一世纪)唐慎微著“証类本草”，共收药一千七百四十六种，至大观二年由艾晟再加修訂，由国家刊行，并改名为“大观本草”。

唐慎微四川晋原人，他的作風朴实，医道高明，給人治病

① 有人攷雷斂是赵宋时代人，創作“炮炙論”約在公元871—1063。因尚未获得多数人的同意，而一般所公認的仍是李时珍所首倡的“雷斂非黃帝时雷公，乃刘宋时之雷斂”。

非常謹慎，偶有人贈送他有名的方劑或秘方，他都詳細的記錄下來，日積月累，作為這部書的主要內容。又把“新修本草”、“嘉祐補註本草”和“圖經本草”，以及宋初或宋以前許多佚亡的本草、經史百家有關的經方秘錄都彙集到這部巨著里，這樣，“大觀本草”在當年確是一部最可寶貴、最有價值的文獻。李時珍撰“本草綱目”時，就是以此書作藍本，加以攷証增補而成的。

13. 宋(公元十二世紀)寇宗奭著“本草衍義”是依據“嘉祐補註本草”和“圖經本草”，參攷許多事實，引証許多論說寫出的，這部書辯証得很詳細。

14. 南宋(公元十二世紀)王繼先等核定大觀、政和兩本草而成“紹興本草”，收載藥品八百六十種。

15. 明(公元十五世紀)朱橚著“救荒本草”，收載了可以充飢的植物四百一十四種。經實地采訪、寫生，因之圖像逼真。本書對採取部分和有毒無毒等均詳細說明，使人不致誤用。

16. 明(公元十五世紀)劉文泰等編著“本草品彙精要”，收載藥品一千八百十五種。

17. 明(公元十六世紀)李時珍著“本草綱目”，引用七百五十八種文獻資料，集歷代本草之大成，總結了用藥經驗，收載藥品達一千八百九十二種。

李時珍(1518—1593)幼時體弱多病，喜歡鑽研藥物，在李時珍的時代已經有了四十余種藥物學著作，李時珍看到當時有关本草的著述雖很丰富，但都不够理想，所以他決心把整理和總結的工作擔負起來。他熱心收集單方，閱讀了近一千種的著作，走過上萬里的路，傾聽了千萬人的意見，并曾亲自采集標本，和自己熟悉的藥物重新對証，以研究它們的藥性，在無數熱愛、关心、尊敬他的人的支持下反復修改，歷經三十年的

不懈努力，终于在 1578 年完成了“本草綱目”这部偉大的著作。“本草綱目”所載药物一千八百九十二种中，有三百七十四种是他首先引用的。全書共五十二卷，分为十六个部門，每一个部門又分成若干类，并附有圖版一千多幅，附方一万多首。

李时珍一生严谨治学的态度，履踐篤实的精神，充分体现在“本草綱目”一書中。他曾批判古人煉丹長服的害处。古人煉丹的主要目的是求長生不老的药，但因其中含有毒的金屬，長服非但無益，反而有害。在“本草綱目”水銀項下李时珍写道：“本經言其久服神仙，……抱朴子以为長生之药，六朝以下貪生者服食，致成廢篤，而喪厥軀，不知若干人矣”。

“本草綱目”以正名为首要，指出名称的来源和異名，其次是物品的出产地，形色和它經濟上的价值，再其次是改正前人的錯誤，制备药物的方法，辨別气味及主治和附方。在“本草綱目”第三次(最末一次)手稿完成时，李时珍已經七十岁了，版剛刻好，他就逝世了。

“本草綱目”这部著作有着严整的科学系統，不仅在当时为集药物大成的經典著作，而且直到今天仍为学术研究和中医临床上的宝典，为药物流学上的重要參攷文献，受到广大医学家、药学家和植物学家的重視。自 1735 年起“本草綱目”陸續被譯成法、日、德、英等国文字，成为世界文化宝庫中光輝的一頁。

李时珍以畢生的精力，从事人民所需要的研究和著述工作，这种偉大精神是值得我們學習的。苏联莫斯科大学新建校舍大礼堂前的走廊壁上，鑲嵌着世界各国聞名科学家的彩色大理石像，其中就有这位偉大的药物流学家李时珍。最近在武汉东湖湖濱磨山植物園內，筹建一座李时珍紀念館。上海电影制片厂拍摄了李时珍傳記影片，在全国各地放映。对紀念此一偉大人物及發揚祖国文化遗产，有着重大的意义。

18. 明(公元十六世紀)李中立著“本草原始”，对药用部分注意描写，并特繪药用部分的形狀，以辨別它的真伪优劣。

19. 清(公元十七世紀)汪昂著“本草备要”，挑选了常用药四百七十五种，扼要記述，避免“綱目”那样的繁杂，切合实用。为后世中医学習药物必讀的書。

20. 清(公元十八世紀)赵学敏著“本草綱目拾遺”。校正“綱目”的錯誤，增加了民間药及外来的药物。現通行市場的药物，凡“綱目”不載的，在这本書里可以見到。

赵学敏字恕軒，清浙江錢塘县人，幼时性好博覽，凡星曆、医卜、方技諸學，無不涉猎，并抄摘成册，不下数千卷。他共著成医書十二种(称为“利濟十二种”)，其中以“本草綱目拾遺”十卷对后世貢献最大。

赵学敏認為“本草綱目”到他那时，經過了百余年，在这些年中，一方面生药品种衍生日繁(“物生既久，則种类愈繁”);另一方面人們的認識是不斷發展的(“俗尚好奇，則珍尤畢集”);因此他以为仍有补遺的必要。他依据“本草綱目”体例，增加了藤、花兩部。他精心撰述的“本草綱目拾遺”保存了若干民間药的疗法，并吸收了一部外来药物，这一著作是值得我們后世推崇的。

21. 清(公元十九世紀)吳其濬著“植物名实圖考”，收載药用植物和普通植物至 2552 种，包括地区遍及全国。是現代研究中药的一部重要参考資料。該書的特点是：绝大部分的圖按照实物精繪，極其逼真。收載药用植物品种甚多，足补本草类書之不足，圖后附以短文，說明顏色、花叶形态、生長栽培情况、药用部位及效用治驗等項，在叙述上是实事求是的。还有轉录的文字，都保持古代文献的原始面貌。除本草方書外，凡屬經史子集中的有关文献，都有引录。

二、中藥的來源

中藥的來源有四个方面：野生者、人工栽培、加工品及進口藥材。

(一) 野生者 我國許多山區是藥材的主要產地，不少藥产区的農民，利用农閒挖掘野生藥材，獵獲野生藥用動物，作為主要副業生產。“全國農業發展綱要”(修正草案)第十七條發展山區經濟項規定：“發展藥材生產。注意保護野生藥材，并且根據可能條件逐步進行部分的人工栽培。”這給藥材生產指出了一个明確的發展方向。

(二) 人工栽培 如吉林撫松的“園參”其產量占全國園參產量的 90%，浙江四明山區樟村、密岩 70% 以上農戶從事“浙貝母”的生產，福建龍安進水鄉 95% 農戶經營“銀耳”，河南新鄉專區(舊屬懷慶府)種植的四大懷貨：菊花、生地、牛膝、山藥，供應全國。現我國藥物栽培面積約在 6,000 萬畝以上，近年又在青海開辟 70 萬畝，僅北京十三陵近郊即開辟 5,000 畝之多，足見政府對藥材生產之重視。其他如四川南川金佛山、浙江笕橋、遼寧沈陽、湖北利川、河北安國等處，都大量栽培藥物。飼養藥用動物在東北有國營養鹿場東豐等九處，另據“人民日報”報導，這兩年來吉林仔鹿和鹿茸也空前丰收。新疆為我國主要產鹿區，今年于巴音郭楞蒙古自治洲和靖縣已建立了兩座養鹿場；北京市養鹿場現有鹿四百只，本年內擬遷至昌平區十三陵龍山鄉，並擴大飼養至一萬只。西南地區已規劃養麝場數處，準備計劃生產麝香；阿壩藏族自治州于 1957 年內即已建立了兩處養麝場，四川紋川縣也建立了養麝場一處，飼養麝三十多頭。

為了保證藥材的供應，提高中藥的品質，減少進口藥材品

種數量，從事藥用植物的廣泛栽培，是解決藥材需要量的主要辦法之一。關於人工栽培藥材的優點，有以下幾個方面：

1. 栽培藥用植物可以保證藥材的供應。野生藥材多生於高山峻嶺，人烟稀少的地方，分佈地區也相當廣闊，所以采集困難，而且交通運輸不易，產量也難以估計。而栽培藥材則可集中於局部，采集容易，運輸方便；產量易于估計。

再者，野生藥用植物數量有限，如果需要量增加，就會供不應求，形成缺貨，另外有些植物濫采濫掘，就會減少產量，甚至絕跡滅種。而人工栽培則可根據需要，有計劃地進行生產，避免缺貨現象。

有些藥用植物如豆蔻、荳子等國內沒有野生，僅靠國外進口，故只有進行自己栽培，才能保證需要。

2. 栽培藥用植物可以保證藥材的品質。野生者可能采錯或摻雜。栽培品則可保持品質的純一，保證藥材品質一致。

野生品因地區分散，交通不便，采集和干燥的時間很難控制，如過早過遲均能影響品質。栽培則可適時採集，並有特殊干燥設備，用適當方法加以干燥，使不致霉壞變質，保證了藥材的品質。

栽培藥用植物可以應用選種的方法，增加藥材的品種。同時由於新品種的創造，可以增加藥材的有效成分，也就提高了藥材的品質。

(三) 加工品 中藥往往應用種種不同的方法，製造成各種便於應用的劑型，這種劑型用現代語來說，就是加工品。由於我國藥材加工技術發展得很早，所以中藥加工品種類繁多。如丹劑有紅昇丹、白降丹、輕粉、紅粉、小靈丹等；膠劑有阿膠、鹿角膠、龜版膠等；發酵制剂有六神鈆、建神鈆、紅鈆、淡豆豉、胆南星等等。

(四) 进口药材 目前我国不产或产量不丰，需待国外进口满足临床需用的，经调查有以下四十余种：

羚羊角、豆蔻(原蔻、小白蔻、三角蔻、貢蔻)蓬大海、天仙子、黑、白胡椒、草蔻、犀角、藤黄、穿山甲、象皮、天竺黄、新木香、阿魏、诃子、胡黄连、没食子、馬錢子、乳香、没药、猴枣、番泻叶、蘆荟、鹿角、西洋参(野山泡参、种参)、玳瑁、海馬、牛黃、藏紅花、檀榔、大腹皮、血竭、砂仁、玉果、公丁香、母丁香等。

目前尚需进口的药材应研究引种、栽培、饲养、生产的方法。一部分较贵重药材也可以考虑合成代用的问题。其中如牛黃一项，1955年国营天津制药厂按照天然牛黃的成分，合成了人工代用品，经药理试验已证明与天然牛黃一致，现已应用于临床。此外北京同仁堂国药提煉厂也已开始生产供应。

附：我国的中药天然资源

我国是世界上有名的出产药材极丰富的国家，全国各地，尤其是西北、西南一带，蕴藏着无穷的天然药物资源。我们对于祖国这些丰富的药物资源，必须很好地加以开发和利用。

今将全国各地特产常用药材列表：

浙江 延胡索、浙贝、白芍、麦门冬、玄参、菊花、烏药、牛蒡子、白朮、半夏、山萸肉、蜈蚣、鮮生地、腹水草等。

江苏 半夏、丹参、夏枯草、苦参、明党参、蒼朮(茅蒼朮)、南沙参、茜草、平貝、水蛭、土元、龟版、龙虎草等。

安徽 白芍、茯苓、桂梗、半夏、菊花、葛根、山楂核、何首烏、鼈甲、龟版、白果、夏枯草、宣木瓜、丹皮、明党参、白朮(生晒朮)、白前、辛夷、狼毒、半边蓮等。

福建 漳瀉、青皮、厚朴、薏米、青黛、烏梅、枳实(壳)、海龍、海馬、昆布、海藻、石决明、祁蛇、穿山甲、琥珀等。

山东 沙参、半夏、蝉衣、桔梗、柴胡、香附、蟾酥、远志、金銀花、瓜蒌、天花粉、蒼朮、前胡、黃芩、益母草、山楂、全蠍、丹皮、葛根、白芷、百部、荆芥、地骨皮、紫苏、猪牙皂等。

山西 甘草、远志、黃芪、柴胡、五加皮、知母、連翹、党参、麝香、防風、麻黃、秦艽、款冬花、猪苓、九节菖蒲等。

河北 柴胡、酸棗仁、五靈脂、蒼朮、半夏、馬兜鈴、黃芩、天花粉、桔梗、葛根、五加皮、天南星、薄荷、知母、瓜蒌、升麻、獨活、防風、白芷、赤芍、山銀柴胡、鮮生地、代赭石等。

河南 茯苓、蒼朮、全蠍、防風、桔梗、金銀花、紅花、柴胡、杏仁、款冬花、山萸肉、連翹、半夏、土元、生地、菊花、牛膝、山藥、麝香等。

湖北 茯苓、半夏、黃連、柴胡、杜仲、桔梗、杜牛膝、厚朴、麝香、鱉甲、龟版、全蠍等。

湖南 厚朴、土茯苓、夏枯草、薄荷、前胡、木通、薏苡仁、烏藥、黃梔子、荆芥、白朮、白芷、木瓜、穿山甲等。

江西 枳實(壳)、車前、荆芥、茵陳、蔓荆子、樟腦、半夏、使君子、吳茱萸、澤瀉、香薷、白及、蜂蜜等。

广东 土茯苓、何首烏、巴戟天、山楂、黃精、高良姜、陳皮、山奈、益智仁、梔榔、沉香、桂枝、桑寄生、砂仁、佛手、昆布、海藻、穿山甲、地龍等。

广西 环草、何首烏、樟腦、蛤蚧、紅芽大戟、鴉胆子、巴戟天、千年健、沉香等。

陕西 杜仲、玉竹、黃芩、麻黃、蒼朮、猪苓、連翹、草烏、威靈仙、仁柴胡、地骨皮、山萸肉、甘遂、九節菖蒲、蒺藜、山楂、白芷、葛根、密蒙花、天麻、烏藥、秦皮、半夏、荆芥、吳茱萸、麝香、玄參、五靈脂等。

甘肃 麻黃、黃芪、猪苓、知母、川芎、款冬花、蒼朮、升麻、防

鳳、赤芍、黨參、鹿茸、麝香、甘草、大黃、苦參、地榆、槐花、五加皮、益母草、旋復花等。

青海 冬虫夏草、黃芪、麻黃、大黃、爐貝、甘草、鹿茸、鹿角、麝香等。

四川 附子、烏头、白附子、麦冬、白芷、半夏、白芍、党参、明党参、大黃、泡参、独活、羌活、当归、菊花、木通、桔梗、柴胡、前胡、秦艽、川芎、杜仲、牛膝、虫草、黃連、貝母、澤瀉、白木耳、木香、甘松、鬱金、巴豆、石斛、吳茱萸、天麻、枳实(壳)、使君子、續斷、樟腦、麝香、鹿茸、蜂蜜等。

云南 云木香、三七、貝母、黃連、當歸、茯苓、天麻、党参、白芍、吳茱萸、防風、佛手、馬梔榔、紅芽大戟、天門冬、杜仲、紅花、紫草、熊胆、穿山甲、斑蝥、麝香、琥珀、雷丸、蛤蚧等。

貴州 杜仲、党参、天麻、桔梗、荆芥、天門冬、吳茱萸、雷丸、虎骨、麝香等。

新疆维吾尔自治区 紫草、貝母、阿魏、紅花、鹿角、鹿茸等。

辽宁 園參、五味子、細辛、沙參、全蠍、蛤士蟆、三稜、芡實、鹿茸、牛黃、大力子、龍膽艸、黃芩、木通、杏仁、郁李仁、車前子、遠志、益母草、馬兜鈴、鮮生地、石決明、獺肝等。

吉林 園參、鹿茸、鹿角、五味子、虎骨、木通、細辛、杏仁、郁李仁、防風、車前子、麻黃、平貝、遠志等。

黑龙江 熊胆、虎骨、五味子、木通、杏仁、黃芪、甘草、防風、麻黃、熊胆、熊掌、虎骨等。

内蒙古自治区 鹿茸、鹿尾、鹿胎、鹿角、甘草、防風、麻黃、黃芩、党参、銀柴胡等。

台灣 大楓子、兒茶、白檀香、胡椒、梔榔、樟腦、相思子、木籠子、降真香、玳瑁、海馬、珍珠、白花蛇、穿山甲、斑蝥等。

台灣氣候溫和，土地肥沃，物產丰富，其中很多種有用的藥材。現在蔣介石

我們樂團還整齊著這片富饒的土地，解放台灣是我們六萬萬人民當前的重大歷史任務。

西藏地區 麻黃、大黃、草烏、天南星、蛇床子、秦艽、芍藥、知母、羌活、貝母、虫草、石膏、硫黃、硼砂、硫酸、芒硝、白矾、食鹽、麝香、鹿茸、豹骨、虎骨、熊胆、羚羊角等。

三、中藥命名的意義

中藥的名稱常根據藥物的形態、顏色、產地、功用等特徵而命名，因此可以使人聯想到它的形態以及功用等。

(一) 依形態命名 如人參，其根形像人；牛膝，它的莖節如牛的膝关节；白頭翁，其近根處有白茸，狀如白頭老翁；貓眼草(澤漆)，花的形狀好像貓的眼睛等。

(二) 因顏色命名 如紅花，是紅色的花；赤小豆，是赤色的小豆；玄參，其形如參，內面是黑色的等。

(三) 因氣味命名 如木香，入藥部分有一定的香氣；麝香，是動物公麝由臍至陰部所分泌的一種物質，具有持久的香氣；苦參，其形如參而味極苦。

(四) 以產地命名 如川芎，是生長在四川的芎藭；阿膠，最早是以山東阿泉的井水熬製烏驥皮，制成的膠而得名。

(五) 因功用命名 如益母草，因該草有益于婦女，用于產後子宮出血；骨碎補，可用于外科接骨行傷；防風，可防禦風邪；通草，此草可通利小便。

(六) 以收穫時間命名 如半夏，其球莖成熟于夏季之半(仲夏)；夏枯草，于夏至節後全草即枯萎；冬青，其葉凌冬尚青；款冬花，至冬至節始開花。

(七) 因入藥部位命名 如霜桑葉，是桑樹的葉子，經霜以後采集入藥；白茅根，是茅草的根；金銀花，初開花時是白

色，二三天后变成黄色，故名；桑白皮，桑树根部的内层皮是白色的；车前子，此草生道旁及牛马车迹中，入药用其种子。

(八) 因使用人命名 如何首乌，相傳有一姓何的老头，服此药白髮变黑，因此称此草为何首乌。

(九) 进口中藥譯音 如诃黎勒，今称诃子，是印度梵語的音譯，意思是天主持来，相傳药王手持者为诃黎勒；曼陀罗华，亦系印度梵語的音譯，原意是細小圆形美丽的花。

目前中藥名称尚存在混乱現象，一物多名或同名異物的情况是很严重的，因而造成采集、收購、使用等等方面之不便，这是急待解决的問題。一物多名的，如云故紙又称木蝴蝶、千張紙、千層紙，肉蓯蓉又称大芸，紅豆蔻又称山姜子，洋金花又称風茄花、曼陀罗花，吳茱萸又称茶辣、左力等等。同名異物的，如以木香命名的中藥有好几种，一种是川木香，它是产于四川的菊科植物，品質輕松，香味薄弱，虽有健胃利尿驅風的功效，但不为医家所重視；青木香，有的是菊科植物土木香的根，有的是馬兜鈴的根，有的是痧药草的根。

形成这种混乱情况的原因大致有以下几方面：

(一) 为了写时方便 大黃写成大王，信石写成人言，礞砂写成月石，蘿蔔写成必卜，蘿仁写成內人，棗仁写成找人等。

(二) 区別药材規格 采集后未經加工去皮的甘草称皮草，已去皮的称粉草；橘紅常于集散地切成相連的五瓣或六瓣，然后折叠起来綑札成把，切五瓣的商品上称为五爪，切六瓣的称为六爪；大黃的規格有蛋吉、中吉、片吉、大黃渣等，蛋吉系將集散西宁的大黃选中型堅重的削去外皮，兩头切齐，楞角处刮光成鴨蛋圆形；中吉系將大中型大黃按其生長形狀，削去外皮，露出内部花紋(如大理石样紋理，是大黃鑑別質量的依据)，不如蛋吉堅重；片吉系用大型大黃縱面剖成二片或三

片，切开面花纹明显，质较松而油性小；大黄渣系大黄加工刮去部分，成片状及碎渣。

(三) 旧时封建迷信：蕷蓼写成吉利，蔓荆子写成万金，蒺藜写成福临等。

统一中药的名称牵扯面较广，不仅关系到中医处方用药与市场习惯，也关系到药农的惯用风俗，因此必须审慎进行。兹提供个人意见供读者参考。

首先应由各有关部门共同研究，拟定统一的中药名称，并在有关报刊上进行广泛宣传，并通过中医地方组织（中医学会、卫生工作者协会）和各地药材公司、供销合作社等商业部门进行贯彻。应规定中医处方时一律用统一名称，商业部门则应通过业务学习，批判使用名称时的标新立异，故弄玄虚的现象，貫徹统一名称。在一切表报、文件、商情刊物以及交易合同中必须一律使用统一名称；在产区收購挂牌应根据当地习惯，可在统一名称下註明当地通用名称。

四、中药的分类

由本草发展来看，中药的分类方法有两种，一种是以“神农本草經”为代表，按药物对人体所发生的影响来分类，分上、中、下三品，原书大意这样說：上品药一百二十种，無毒，屬营养強壯药，可以經常服用；中品药一百二十种，有的有毒，有的無毒，应斟酌使用，可以补养，也可以治病；下品药一百二十五种，是属于毒剧药，为治病用的主要药品。另一种是以“本草綱目”为代表，按照药物本身的属性来分类。“本草綱目”将药物分为水、火、土、金石、草、谷、菜、果、木、器、虫、鱗、介、禽、兽、人等十六部。

近代药物的分类方法：

(一)按植物系統分类 就是根据植物自然分类法排列，因为多数同科植物或近緣植物，常有其共同的特性及类似的成分，例如薔薇科、芸香科、茄科、繖形科、豆科等。

(二)按药理作用分类 就是按照中药的主要药理作用来分类，例如强心药、利尿药、止血药、解热药、健胃药、制泻药、鎮吐药、瀉药、催吐药、子宫肌兴奋药、子宫肌抑制药、新陈代谢药、鎮咳祛痰药、降血压药、特殊消毒药、驅虫药、中枢神經兴奋药、中樞神經和周圍神經抑制药、植物性神經系統药等。

(三)按有效成分分类 就是依据中药所含的主要有效成分来分类，例如含生物鹼的、含苷的、含皂素的、含黃鱗体的、含鞣質的、含揮發油的、含脂肪油的、含树脂的、含树膠的、含有机酸的、含苦味質的等。

(四)按药用部分分类 就是按照中药所采用的部分来分类，例如根类、根莖类、种子类、草卉类、果实类、皮类、木类、叶类、花类、动物类、矿物类等。

上述的各种分类方法各有优缺点，按照药用部分分类的方法，便于中药外形的比較和識別；按照有效成分分类的方法，便于进行單味药的成分分析比較；按照药理作用分类方法便于临床应用及系統學習；按照植物系統分类便于就植物系統关系比較排列，并能进一步探討植物演化的知識。

五、中药采集的季节

中药因入药部分不同，其采集时间亦因之而異，选择入药部分力量最充实的时期采集是总的原則。

(一)植物地下部分(根、根莖等) 应在秋季該植物地上部分开始枯萎之后，到早春植物將生長之前采集。在此时期內植物地下部分的組織中充滿了存貯的营养物质，所含的有效成分

也最多。

(二)植物的皮部 一般应在春季或初夏时期采集。此时植物浆液已开始移动，形成层活动旺盛，该层细胞分裂最快，所以皮部易与木部分离。有雨季的地区可在雨季中采收。

(三)植物的叶部 一般应在光合作用旺盛时期，即花未开或正在开花而果实和种子尚未成熟时采集。此时植物已完全成长，叶子正处在最健壮的状态。

(四)植物的花 一般当在未开放前采集。含苞未放时采取花蕾，此时花中有效成分最足，如金银花；也有花半开时采收的，也是取它的有效成分在入药部分最足时，如金桂、银桂；也有采取正开时的花朵，如旋覆花。又花类入药采取后必须轻放，切不可挤压。

(五)植物的果实 一般应在接近成熟期，即充分成长而尚未成熟时采集，但也有因效力不同而采用未熟的或已熟透的，如枳实乃是枳树上未熟的果实，取其“散胸中满闷”力量大；而枳壳是枳树的已熟透的果实，甚至落地的，取其效力缓和。一般在强壮的患者用前者，体弱者或不需要更大药力的用后者。

(六)植物的种子和核仁 一般应在充分成熟时采收，因成熟后易于干燥及保存，也好用为繁殖新植物。也有选择不成熟种子的，如“浮小麦”。

(七)植物全草 一般应在开花时采收，此时全部力量都充实在整个草上，茎的老嫩也适宜，全草力量最充足。

(八)树脂及胶质类 一般应选干燥季节或在雨季后采收，此时胶质产量大，也易于收集。

(九)动物类中药 一般潜藏地下的小动物宜于夏秋季捕捉或挖掘，如蚯蚓、蟋蟀、蝼蛄等。此时它们活动最盛，易于捕捉与挖掘。大动物虽然四季皆产，但一般是在秋后及冬季，正